बिजली टेंडरों में कमीशन का खेल!

कोटा थर्मल में एसीबी की कार्रवाई ने खोली कंपनियों में भ्रष्टाचार की पोल

जयपुर @ पत्रिका

patrika.com/city

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की कोटा थर्मल में छापामार कार्रवाई से बिजली कम्पनियों में भ्रष्टाचार एक बार फिर चर्चा में है। दरअसल, पांच बिजली कम्पनियों के टेण्डरों में कमीशन का खेल आम बात है। अकेले राजस्थान डिस्कॉम की बात की जाए तो 10 फीसदी तक के कथित कमीशन के चलते अभियंताओं में नए ऑर्डर देने की होड़ सी मची रहती है। फिर चाहे काम तय समय में हो या नहीं, इसकी किसी को चिंता नहीं रहती। आश्चर्य की बात यह है कि डिस्कॉम की ऑडिट शाखा कई बार ऐसे मामलों में आपत्ति भी जता चुकी है, इसके बावजूद अभियंता बेखौफ हैं। सूत्रों की माने तो एसीबी की अब ऐसे मामलों पर भी निगाह है।

पहले सीएलआरसी, फिर फील्ड में खेल

बिजली वितरण कम्पनियों में स्टाफ की कमी के चलते विद्युत पोल, ट्रांसफार्मर, मीटर, नए कनेक्शन, भूमिगत केबल डालने व मेंटिनेंस समेत अधिकांश काम ठेकेदारों के भरोसे हैं। इसके लिए सेन्ट्रल लेबर रेट कट्रिक्ट (सीएलआरसी) के

आधार पर काम देने की परम्परा है। मिलीभगत में खेल की शुरुआत की यह पहली कड़ी है। डिस्कॉम सूत्रों की माने तो ठेकेदार पहले मुख्यालय पर दबाव बनाकर कुछ समय में ही सीएलआरसी की दरों में संशोधन करवा लेते हैं और फिर फील्ड में कमीशन का लालच देकर मनमाने ऑर्डर लेते हैं। पिछले दिनों वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक में यह मामला प्रमुखता से उठा था। बताया जा रहा है कि इसके बाद वर्ष 2013-14 से पुराने कई ऑर्डर निरस्त भी किए गए, लेकिन अब भी फील्ड में मनमर्जी से ऑर्डर देने की परम्परा जारी है।

सख्ती की तो छोड़ा काम

डिस्कॉम ने पिछले दिनों ठेकेदारों की मनमानी पर लगाम कसते हुए मेजरमेंट बुक (एमबी) को अभियंताओं से भरवाने के निर्देश दिए थे। साथ ही कहा था कि एमबी में हर आइटम व काम का विस्तृत जिक्र किया जाए। इससे ठेकेदारो ने काम बन्द कर दिया। ऐसे में डिस्कॉम प्रशासन ने आदेश निरस्त कर दिया।

पत्रिका Mon, 02 November 2015
epaper.patrika.com/c/7098208